

Para 3

Sipara 3 of 30 · 126 Ayahs · Translation: Hindi

Al-Baqara

253

۞ تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ ۞ مِنْهُمْ مِّنَ كَلَمِ اللَّهِ ۚ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ
دَرَجَاتٍ ۚ ۞ وَءَاتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
مَا أَقْتَلَ الَّذِينَ مِن ۚ ۞ بَعْدِهِم مِّن ۚ ۞ بَعْدَ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنِ اخْتَلَفُوا ۚ فَمِنْهُمْ
مَّنْ ءَامَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَقْتَلُوا ۚ وَلَكِنَّا اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ

यह सब रसूल (जो हमने भेजे) उनमें से बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत दी उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं जिनसे खुद खुदा ने बात की उनमें से बाज़ के (और तरह पर) दर्जे बुलन्द किये और मरियम के बेटे ईसा को (कैसे कैसे रौशन मौजिज़े अता किये) और रूहुलकुदस (जिबर्ईल) के ज़रिये से उनकी मदद की और अगर खुदा चाहता तो लोग इन (पैगम्बरों) के बाद हुये वह अपने पास रौशन मौजिज़े आ चुकने पर आपस में न लड़ मरते मगर उनमें फूट पड़ गई पस उनमें से बाज़ तो ईमान लाये और बाज़ काफ़िर हो गये और अगर खुदा चाहता तो यह लोग आपस में लड़ते मगर खुदा वही करता है जो चाहता है

254

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَنْفِقُوا ۚ مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ ۚ لَا بَيْعٌ ۚ فِيهِ وَلَا
خُلَّةٌ ۚ وَلَا شَفْعَةٌ ۚ ۞ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ

ऐ ईमानदारों जो कुछ हमने तुमको दिया है उस दिन के आने से पहले (खुदा की राह में) खर्च करो जिसमें न तो खरीदो फरोख्त होगी और न यारी (और न आशनाई) और न सिफ़ारिश (ही काम आयेगी) और कुफ़र करने वाले ही तो जुल्म ढाते हैं

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَهُ ۚ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ ۚ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ

खुदा ही वो ज़ाते पाक है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वह) ज़िन्दा है (और) सारे जहान का संभालने वाला है उसको न ऊँघ आती है न नींद जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) उसी का है कौन ऐसा है जो बग़ैर उसकी इजाज़त के उसके पास किसी की सिफ़ारिश करे जो कुछ उनके सामने मौजूद है (वह) और जो कुछ उनके पीछे (हो चुका) है (खुदा सबको) जानता है और लोग उसके इल्म में से किसी चीज़ पर भी अहाता नहीं कर सकते मगर वह जिसे जितना चाहे (सिखा दे) उसकी कुर्सी सब आसमानों और ज़मीनों को घेरे हुये है और उन दोनों (आसमान व ज़मीन) की निगेहदाश्त उसपर कुछ भी मुश्किल नहीं और वह आलीशान बुजुर्ग मरतबा है

لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ ۚ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَن يَكْفُرْ بِالطَّغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

दीन में किसी तरह की जबरदस्ती नहीं क्योंकि हिदायत गुमराही से (अलग) ज़ाहिर हो चुकी तो जिस शख्स ने झूठे खुदाओं बुतों से इंकार किया और खुदा ही पर ईमान लाया तो उसने वो मज़बूत रस्सी पकड़ी है जो टूट ही नहीं सकती और खुदा सब कुछ सुनता और जानता है

اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

खुदा उन लोगों का सरपरस्त है जो ईमान ला चुके कि उन्हें (गुमराही की) तारीकियों से निकाल कर (हिदायत की) रौशनी में लाता है और जिन लोगों ने कुफ़्र इस्तेयार किया उनके सरपरस्त शैतान हैं कि उनको (ईमान की) रौशनी से निकाल कर (कुफ़्र की) तारीकियों में डाल देते हैं यही लोग तो जहन्नुमी हैं (और) यही उसमें हमेशा रहेंगे

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ ۖ مَ فِي رَبِّهِ ۚ أَنِ اعْتَلَهُ اللَّهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ ۖ مَ رَبِّي
الَّذِي يُحْيِي ۖ وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا ۖ أَحْيِي ۖ وَأُمِيتُ ۖ قَالَ إِبْرَاهِيمُ ۖ مَ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي
بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

(ऐ रसूल) क्या तुम ने उस शख्स (के हाल) पर नज़र नहीं की जो सिर्फ़ इस बिरते पर कि खुदा ने उसे सल्तनत दी थी इब्राहीम से उनके परवरदिगार के बारे में उलझ पड़ा कि जब इब्राहीम ने (उससे) कहा कि मेरा परवरदिगार तो वह है जो (लोगों को) जिलाता और मारता है तो वो भी (शेखी में) आकर कहने लगा मैं भी जिलाता और मारता हूँ (तुम्हारे खुदा ही में कौन सा कमाल है) इब्राहीम ने कहा (अच्छा) खुदा तो आफ़ताब को पूरब से निकालता है भला तुम उसको पश्चिम से निकालो इस पर वह काफ़िर हक्का बक्का हो कर रह गया (मगर ईमान न लाया) और खुदा ज़ालिमों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुंचाया करता

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ ۚ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّى يُحْيِي ۖ هَذِهِ اللَّهُ بَعْدَ
مَوْتِهَا ۖ فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةً عَامٍ ۖ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ
بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ مِائَةً عَامٍ ۖ فَأَنْظِرْ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ
وَأَنْظِرْ إِلَى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً ۖ لِلنَّاسِ ۖ وَأَنْظِرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ
نَكْسُوهَا لَحْمًا ۖ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ ۖ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ

(ऐ रसूल तुमने) मसलन उस (बन्दे के हाल पर भी नज़र की जो एक गाँव पर से होकर गुज़रा और वो ऐसा उजड़ा था कि अपनी छतों पर से ढह के गिर पड़ा था ये देखकर वह बन्दा (कहने लगा) अल्लाह अब इस गाँव को ऐसी वीरानी के बाद क्योंकर आबाद करेगा इस पर खुदा ने उसको (मार डाला) सौ बरस तक मुर्दा रखा फिर उसको जिला उठाया (तब) पूछा तुम कितनी देर पड़े रहे अर्ज की एक दिन पड़ा रहा एक दिन से भी कम फ़रमाया नहीं तुम (इसी हालत में) सौ बरस पड़े रहे अब ज़रा अपने खाने पीने (की चीज़ों) को देखो कि बुसा तक नहीं और ज़रा अपने गधे (सवारी) को तो देखो कि उसकी हड्डियाँ ढेर पड़ी हैं और सब इस वास्ते किया है ताकि लोगों के लिये तुम्हें कुदरत का नमूना बनाये और अच्छा अब (इस गधे की) हड्डियों की तरफ़ नज़र करो कि हम क्योंकर जोड़ जाड़ कर ढाँचा बनाते हैं फिर उनपर गोश्त चढ़ाते हैं पस जब ये उनपर ज़ाहिर हुआ तो बेसाख्ता बोल उठे कि (अब) मैं ये यक़ीने का मिल जानता हूँ कि खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ ۖ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى ۖ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنْ ۚ قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِنْ لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي ۚ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً ۚ مِنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ أَجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ ۚ مِنْهُنَّ جُزْءًا ۚ ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ

और (ऐ रसूल) वह वाकेया भी याद करो जब इबराहीम ने (खुदा से) दरखास्त की कि ऐ मेरे परवरदिगार तू मुझे भी तो दिखा दे कि तू मुर्दों को क्योंकर ज़िन्दा करता है खुदा ने फ़रमाया क्या तुम्हें (इसका) यक़ीन नहीं इबराहीम ने अर्ज़ की (क्यों नहीं) यक़ीन तो है मगर आँख से देखना इसलिए चाहता हूँ कि मेरे दिल को पूरा इत्मिनान हो जाए फ़रमाया (अगर ये चाहते हो) तो चार परिन्दे लो और उनको अपने पास मँगवा लो और टुकड़े टुकड़े कर डालो फिर हर पहाड़ पर उनका एक एक टुकड़ा रख दो उसके बाद उनको बुलाओ (फिर देखो तो क्यों कर वह सब के सब तुम्हारे पास दौड़े हुए आते हैं और समझ रखो कि खुदा बेशक ग़ालिब और हिकमत वाला है

مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ ۖ أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُوءِ بُلَةٍ ۚ مَا ۖ نَّةٌ حَبَّةٍ ۚ وَاللَّهُ يُضْعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ

जो लोग अपने माल खुदा की राह में खर्च करते हैं उनके (खर्च) की मिसाल उस दाने की सी मिसाल है जिसकी सात बालियाँ निकलें (और) हर बाली में सौ (सौ) दाने हों और खुदा जिसके लिये चाहता है दूना कर देता है और खुदा बड़ी गुन्जाइश वाला (हर चीज़ से) वाक्फ़ है

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا ۚ مَنًّا ۚ وَلَا أَذًى ۚ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

जो लोग अपने माल खुदा की राह में खर्च करते हैं और फिर खर्च करने के बाद किसी तरह का एहसान नहीं जताते हैं और न जिनपर एहसान किया है उनको सताते हैं उनका अज़्र (व सवाब) उनके परवरदिगार के पास है और न आख़रत में उनपर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे

قَوْلٌ ۚ مَّعْرُوفٌ ۚ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ ۚ مِّنْ صَدَقَةٍ ۚ يَتَّبِعُهَا أَذًى ۚ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ۚ

(सायल को) नरमी से जवाब दे देना और (उसके इसरार पर न झिड़कना बल्कि) उससे दरगुज़र करना उस ख़ैरात से कहीं बेहतर है जिसके बाद (सायल को) ईज़ा पहुंचे और खुदा हर शै से बेपरवा (और) बुर्दबार है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تُبْطِلُوا ۚ صَدَقَتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ ۚ رِئَاءَ
النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ ۚ فَمَثَلُهُ ۚ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ ۚ
فَأَصَابَهُ ۚ وَٱبِلٌ ۚ فَتَرَكَهُ ۚ صُلْدٌ ۚ ا ۚ لَا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ ۚ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي ٱلْقَوْمَ ٱلْكَافِرِينَ

ऐ ईमानदारों आपनी खैरात को एहसान जताने और (सायल को) ईजा (तकलीफ) देने की वजह से उस शख्स की तरह अकारत मत करो जो अपना माल महज लोगों को दिखाने के वास्ते खर्च करता है और खुदा और रोजे आखेरत पर ईमान नहीं रखता तो उसकी खैरात की मिसाल उस चिकनी चट्टान की सी है जिसपर कुछ खाक (पड़ी हुई) हो फिर उसपर ज़ोर शोर का (बड़े बड़े क़तरों से) मेंह बरसे और उसको (मिट्टी को बहाके) चिकना चुपड़ा छोड़ जाए (इसी तरह) रियाकार अपनी उस खैरात या उसके सवाब में से जो उन्होंने की है किसी चीज़ पर क़ब्ज़ा न पाएंगे (न दुनिया में न आखेरत में) और खुदा काफ़िरों को हिदायत करके मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता

وَمَثَلُ ٱلَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ ٱبْتِغَاءَ مَرْضَاتِ ٱللَّهِ وَتَثْبِيتًا ۚ مِّنْ أَنفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ ۚ
بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَٱبِلٌ ۚ فَآتَتْ أَكْطَٰهَا ضِعْفَيْنِ فَإِن لَّمْ يُصِْبْهَا وَٱبِلٌ ۚ فَطُلٌّ ۚ ۚ وَاللَّهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

और जो लोग खुदा की खुशनूदी के लिए और अपने दिली एतकाद से अपने माल खर्च करते हैं उनकी मिसाल उस (हरे भरे) बाग़ की सी है जो किसी टीले या टीकरे पर लगा हो और उस पर ज़ोर शोर से पानी बरसा तो अपने दुगने फल लाया और अगर उस पर बड़े धड़ल्ले का पानी न भी बरसे तो उसके लिये हल्की फुआर (ही काफ़ी) है और जो कुछ तुम करते हो खुदा उसकी देखभाल करता रहता है

أَيُّودٌ أَحَدُكُمُ أَن تَكُونَ لَهُ ۚ جَنَّةٌ ۚ مِّن نَّخِيلٍ ۚ وَأَعْنَٰبٍ ۚ تَجْرِىٰ مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَارُ
لَهُ ۚ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ ٱلْكِبَرُ وَلَهُ ۚ ذُرِّيَّةٌ ۚ ضِعْفًا فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ ۚ
فِيهِ نَارٌ ۚ فَٱحْتَرَقَتْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ ٱللَّهُ لَكُمْ ٱلْءَايَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ

भला तुम में कोई भी इसको पसन्द करेगा कि उसके लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो उसके नीचे नहरें जारी हों और उसके लिए उसमें तरह तरह के मेवे हों और (अब) उसको बुढ़ापे ने घेर लिया है और उसके (छोटे छोटे) नातवाँ कमज़ोर बच्चे हैं कि एकबारगी उस बाग़ पर ऐसा बगोला आ पड़ा जिसमें आग (भरी) थी कि वह बाग़ जल भुन कर रह गया खुदा अपने एहकाम को तुम लोगों से साफ़ साफ़ बयान करता है ताकि तुम ग़ौर करो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَنْفِقُوا ۚ مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ
الْأَرْضِ ۚ وَلَا تَيَمَّمُوا ۚ الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِآخِذِيهِ إِلَّا أَنْ تُغْمِضُوا ۚ
فِيهِ ۚ وَأَعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ

ऐ ईमान वालों अपनी पाक कमाई और उन चीजों में से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से पैदा की हैं (खुदा की राह में) खर्च करो और बुरे माल को (खुदा की राह में) देने का क़सद भी न करो हालाँकि अगर ऐसा माल कोई तुमको देना चाहे तो तुम अपनी खुशी से उसके लेने वाले नहीं हो मगर ये कि उस (के लेने) में (अमदन) आंख चुराओ और जाने रहो कि खुदा बेशक बेनियाज़ (और) सज़ावारे हम्द है

الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَاءِ ۚ وَاللَّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً ۚ مِنْهُ وَفَضْلًا ۚ ا
وَاللَّهُ وَسِعَ عَلِيمٌ

शैतान तमको तंगदस्ती से डराता है और बुरी बात (बुख़्त) का तुमको हुक्म करता है और खुदा तुमसे अपनी बख़्शिश और फ़ज़ल (व करम) का वायदा करता है और खुदा बड़ी गुन्जाइश वाला और सब बातों का जानने वाला है

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۚ ا وَمَا
يَذْكُرُ إِلَّا أَوْ ۚ لَوْ ۚ الْأَلْبَبِ

वह जिसको चाहता है हिकमत अता फ़रमाता है और जिसको (खुदा की तरफ) से हिकमत अता की गई तो इसमें शक नहीं कि उसे खूबियों से बड़ी दौलत हाथ लगी और अक्लमन्दों के सिवा कोई नसीहत मानता ही नहीं

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ نَذْرٍ ۚ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ ۚ ا وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ
أَنْصَارٍ

और तुम जो कुछ भी खर्च करो या कोई मन्नत मानो खुदा उसको ज़रूर जानता है और (ये भी याद रहे) कि ज़ालिमों का (जो) खुदा का हक़ मार कर औरों की नज़्ज़ करते हैं (क़यामत में) कोई मददगार न होगा

إِنْ تُبْدُوا ۚ الصَّدَقَتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَإِنْ تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ ۚ لَكُمْ ۚ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّئَاتِكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ

अगर खैरात को ज़ाहिर में दो तो यह (ज़ाहिर करके देना) भी अच्छा है और अगर उसको छिपाओ और हाजतमन्दों को दो तो ये छिपा कर देना तुम्हारे हक़ में ज्यादा बेहतर है और ऐसे देने को खुदा तुम्हारे गुनाहों का कफ़ारा कर देगा और जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे खबरदार है

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا ۚ مِنْ خَيْرٍ ۚ فَلَا تُنْفِسْكُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا ۚ مِنْ خَيْرٍ ۚ يُوفِّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ

ऐ रसूल उनका मंज़िले मक़सूद तक पहुंचाना तुम्हारा काम नहीं (तुम्हारा काम सिर्फ़ रास्ता दिखाना है) मगर हॉ खुदा जिसको चाहे मंज़िले मक़सूद तक पहुंचा दे और (लोगों) तुम जो कुछ नेक काम में खर्च करोगे तो अपने लिए और तुम खुदा की खुशनूदी के सिवा और काम में खर्च करते ही नहीं हो (और जो कुछ तुम नेक काम में खर्च करोगे) (क़यामत में) तुमको भरपूर वापस मिलेगा और तुम्हारा हक़ न मारा जाएगा

لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أُحْصِرُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا ۚ فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ بِسِيمَاهُمْ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا ۚ وَمَا تُنْفِقُوا ۚ مِنْ خَيْرٍ ۚ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ ۚ عَلِيمٌ

(यह खैरात) खास उन हाजतमन्दों के लिए है जो खुदा की राह में घिर गये हो (और) रूए ज़मीन पर (जाना चाहें तो) चल नहीं सकते नावाक़िफ़ उनको सवाल न करने की वजह से अमीर समझते हैं (लेकिन) तू (ऐ मुखातिब अगर उनको देखे) तो उनकी सूरत से ताड़ जाये (कि ये मोहताज हैं अगरचे) लोगों से चिमट के सवाल नहीं करते और जो कुछ भी तुम नेक काम में खर्च करते हो खुदा उसको ज़रूर जानता है

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا ۚ وَعَلَانِيَةً ۚ فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

जो लोग रात को या दिन को छिपा कर या दिखा कर (खुदा की राह में) खर्च करते हैं तो उनके लिए उनका अज़्र व सवाब उनके परवरदिगार के पास है और (क़यामत में) न उन पर किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा और न वह आज़ुर्दा खातिर होंगे

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا ۚ إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا ۚ ۚ وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا ۚ ۚ فَمَنْ جَاءَهُ ۚ مَوْعِظَةٌ ۚ مِنْ رَبِّهِ ۚ فَانْتَهَىٰ فَلَهُ ۚ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ ۚ إِلَىٰ اللَّهِ ۚ وَمَنْ عَادَ فَأُو۟لَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

जो लोग सूद खाते हैं वह (क्रयामत में) खड़े न हो सकेंगे मगर उस शख्स की तरह खड़े होंगे जिस को शैतान ने लिपट कर मखबूतुल हवास (पागल) बना दिया है ये इस वजह से कि वह उसके क्रायल हो गए कि जैसा बिक्री का मामला वैसा ही सूद का मामला हालाँकि बिक्री को तो खुदा ने हलाल और सूद को हराम कर दिया बस जिस शख्स के पास उसके परवरदिगार की तरफ से नसीहत (मुमानियत) आये और वह बाज़ आ गया तो इस हुक्म के नाज़िल होने से पहले जो सूद ले चुका वह तो उस का हो चुका और उसका अम्र (मामला) खुदा के हवाले है और जो मनाही के बाद फिर सूद ले (या बिक्री के माले को यकसा बताए जाए) तो ऐसे ही लोग जहन्नुम में रहेंगे

يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُزَيِّدُ الصَّدَقَاتِ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ

खुदा सूद को मिटाता है और खैरात को बढ़ाता है और जितने नाशुके गुनाहगार हैं खुदा उन्हें दोस्त नहीं रखता

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ ۚ وَأَقَامُوا ۚ الصَّلَاةَ ۚ وَءَاتَوْا ۚ الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

(हाँ) जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ी और ज़कात दिया किये उनके लिए अलबत्ता उनका अज़्र व (सवाब) उनके परवरदिगार के पास है और (क्रयामत में) न तो उन पर किसी क्रिस्म का खौफ़ होगा और न वह रन्जीदा दिल होंगे

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اتَّقُوا ۚ اللَّهَ وَذَرُوا ۚ مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا ۚ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

ऐ ईमानदारों खुदा से डरो और जो सूद लोगों के ज़िम्मे बाक़ी रह गया है अगर तुम सच्चे मोमिन हो तो छोड़ दो

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا ۖ فَأْذَنُوا ۚ بِحَرْبٍ ۚ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَإِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوسُ
أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ

और अगर तुमने ऐसा न किया तो खुदा और उसके रसूल से लड़ने के लिये तैयार रहो और अगर तुमने तौबा की है तो तुम्हारे लिए तुम्हारा असल माल है न तुम किसी का ज़बरदस्ती नुकसान करो न तुम पर ज़बरदस्ती की जाएगी

وَإِنْ كَانَ ذُو عُسْرَةٍ ۖ فَنظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَنْ تَصَدَّقُوا ۚ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ إِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

और अगर कोई तंगदस्त तुम्हारा (कर्जदार हो) तो उसे खुशहाली तक मोहल्लत (दो) और सदका करो और अगर तुम समझो तो तुम्हारे हक में ज्यादा बेहतर है कि असल भी बख्श दो

وَاتَّقُوا ۚ يَوْمًا ۖ تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَىٰ اللَّهِ ۚ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ ۖ مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا
يُظْلَمُونَ

और उस दिन से डरो जिस दिन तुम सब के सब खुदा की तरफ लौटाये जाओगे फिर जो कुछ जिस शख्स ने किया है उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उनकी ज़रा भी हक तलफ़ी न होगी

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدِينٍ إِلَىٰ أَجَلٍ ۚ مُّسَمًّى ۖ فَاكْتُبُوهُ ۚ وَلْيَكْتُبْ
بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ ۚ بِالْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ ۚ فَلْيَكْتُبْ
وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ ۚ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ فَإِنْ كَانَ الَّذِي
عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَنْ يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُ ۚ بِالْعَدْلِ ۚ
وَأَسْتَشْهِدُوا ۚ شَهِيدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَإِنْ لَمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ ۚ وَأَمْرَأَتَانِ
مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكَّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَىٰ ۚ وَلَا يَأْبَ
الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا ۚ وَلَا تَسْمُوا ۚ أَنْ تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ۚ ۚ

ذَلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا ۚ ۚ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجْرَةً
 حَاضِرَةً ۚ تَدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۚ وَأَشْهَدُوا ۚ إِذَا
 تَبَايَعْتُمْ ۚ وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ ۚ وَلَا شَهِيدٌ ۚ ۚ وَإِنْ تَفْعَلُوا ۚ فَإِنَّهُ ۚ فُسُوقٌ ۚ بِكُمْ ۚ
 وَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ ۚ وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ

ऐ ईमानदारों जब एक मियादे मुकररा तक के लिए आपस में कर्ज का लेन देन करो तो उसे लिखा पढ़ी कर लिया करो और लिखने वाले को चाहिये कि तुम्हारे दरमियान तुम्हारे कौल व करार को, इन्साफ़ से ठीक ठीक लिखे और लिखने वाले को लिखने से इन्कार न करना चाहिये (बल्कि) जिस तरह खुदा ने उसे (लिखना पढ़ना) सिखाया है उसी तरह उसको भी वे उज्र (बहाना) लिख देना चाहिये और जिसके ज़िम्मे कर्ज आयद होता है उसी को चाहिए कि (तमस्सुक) की इबारत बताता जाये और खुदा से डरे जो उसका सच्चा पालने वाला है डरता रहे और (बताने में) और कर्ज देने वाले के हुक्क में कुछ कमी न करे अगर कर्ज लेने वाला कम अक्ल या माज़ूर या खुद (तमस्सुक) का मतलब लिखवा न सकता हो तो उसका सरपरस्त ठीक ठीक इन्साफ़ से लिखवा दे और अपने लोगों में से जिन लोगों को तुम गवाही लेने के लिये पसन्द करो (कम से कम) दो मर्दों की गवाही कर लिया करो फिर अगर दो मर्द न हो तो (कम से कम) एक मर्द और दो औरतें (क्योंकि) उन दोनों में से अगर एक भूल जाएगी तो एक दूसरी को याद दिला देगी, और जब गवाह हुक्काम के सामने (गवाही के लिए) बुलाया जाए तो हाज़िर होने से इन्कार न करे और कर्ज का मामला ख्वाह छोटा हो या उसकी मियाद मुअय्युन तक की (दस्तावेज़) लिखवाने में काहिली न करो, खुदा के नज़दीक ये लिखा पढ़ी बहुत ही मुन्सिफ़ाना कारवाई है और गवाही के लिए भी बहुत मज़बूती है और बहुत करीन (कयास) है कि तुम आईन्दा किसी तरह के शक व शुबहा में न पड़ो मगर जब नक़द सौदा हो जो तुम लोग आपस में उलट फेर किया करते हो तो उसकी (दस्तावेज़) के न लिखने में तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं है (हाँ) और जब उसी तरह की खरीद (फ़रोख्त) हो तो गवाह कर लिया करो और क़ातिब (दस्तावेज़) और गवाह को ज़रर न पहुँचाया जाए और अगर तुम ऐसा कर बैठे तो ये ज़रूर तुम्हारी शरारत है और खुदा से डरो खुदा तुमको मामले की सफ़ाई सिखाता है और वह हर चीज़ को खूब जानता है

283

ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ ۚ وَلَمْ تَجِدُوا ۚ كَاتِبًا ۚ فَرِهْنَ ۚ مَقْبُوضَةً ۚ ۚ فَإِنْ أَثِمْنَ
 بَعْضُكُم بَعْضًا ۚ فَلْيُؤَدِّ الَّذِي أُؤْتِمِنَ أَمْنَتَهُ ۚ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ ۚ وَلَا تَكْتُمُوا ۚ
 الشَّهَادَةَ ۚ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ ۚ آثِمٌ ۚ قَلْبُهُ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۚ

और अगर तुम सफ़र में हो और कोई लिखने वाला न मिले (और कर्ज देना हो) तो रहन या कब्ज़ा रख लो और अगर तुममें एक का एक को एतबार हो तो (यूँ ही कर्ज दे सकता है मगर) फिर जिस शख्स पर एतबार किया गया है (कर्ज लेने वाला) उसको चाहिये कर्ज देने वाले की अमानत (कर्ज) पूरी पूरी अदा कर दे और अपने पालने वाले खुदा से डरे (मुसलमानो) तुम गवाही को न छिपाओ और जो छिपाएगा तो बेशक उसका दिल गुनाहगार है और तुम लोग जो कुछ करते हो खुदा उसको खूब जानता है

لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِنْ تُبْذَرُوا ۚ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوا ۚ
يَحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ ۚ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ ۚ
قَدِيرٌ

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (ग़रज़) सब कुछ खुदा ही का है और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है ख्वाह तुम उसको ज़ाहिर करो या उसे छिपाओ खुदा तुमसे उसका हिसाब लेगा, फिर जिस को चाहे बख्श दे और जिस पर चाहे अज़ाब करे, और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है

ءَامَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ ۚ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ ۚ
وَكُتُبِهِ ۚ وَرُسُلِهِ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ ۚ مِنْ رُسُلِهِ ۚ ۚ وَقَالُوا ۚ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ
غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ

हमारे पैग़म्बर (मोहम्मद) जो कुछ उनपर उनके परवरदिगार की तरफ से नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाए और उनके (साथ) मोमिनीन भी (सबके) सब खुदा और उसके फ़रिशतों और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए (और कहते हैं कि) हम खुदा के पैग़म्बरों में से किसी में तफ़रक़ा नहीं करते और कहने लगे ऐ हमारे परवरदिगार हमने (तेरा इरशाद) सुना

لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا أُكْتَسَبَتْ ۚ رَبَّنَا لَا
تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا ۚ كَمَا حَمَلْتَهُ ۚ عَلَى
الَّذِينَ مِنْ قَبْلُنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۚ ۚ وَأَعْفُ عَنَّا وَاعْفِرْ لَنَا
وَأَرْحَمْنَا ۚ أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

और मान लिया परवरदिगार हमें तेरी ही मग़फ़िरत की (ख्वाहिश है) और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है खुदा किसी को उसकी ताक़त से ज्यादा तकलीफ़ नहीं देता उसने अच्छा काम किया तो अपने नफ़े के लिए और बुरा काम किया तो (उसका वबाल) उसी पर पड़ेगा ऐ हमारे परवरदिगार अगर हम भूल जाएं या ग़लती करें तो हमारी गिरफ्त न कर ऐ हमारे परवरदिगार हम पर वैसा बोझ न डाल जैसा हमसे अगले लोगों पर बोझ डाला था, और ऐ हमारे परवरदिगार इतना बोझ जिसके उठाने की हमें ताक़त न हो हमसे न उठवा और हमारे कुसूरों से दरगुज़र कर और हमारे गुनाहों को बख्श दे और हम पर रहम फ़रमा तू ही हमारा मालिक है तू ही काफ़िरों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अलिफ़ लाम मीम

2

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ

अल्लाह ही वह (खुदा) है जिसके सिवा कोई क़ाबिले परस्तिश नहीं है वही ज़िन्दा (और) सारे ज़हान का सँभालने वाला है

3

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ

(ऐ रसूल) उसी ने तुम पर बरहक़ किताब नाज़िल की जो (आसमानी किताबें पहले से) उसके सामने मौजूद हैं उनकी तसदीक़ करती है और उसी ने उससे पहले लोगों की हिदायत के वास्ते तौरत व इन्ज़ील नाज़िल की

4

مِن قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ

और हक़ व बातिल में तमीज़ देने वाली किताब (कुरान) नाज़िल की बेशक जिन लोगों ने खुदा की आयतों को न माना उनके लिए सख्त अज़ाब है और खुदा हर चीज़ पर ग़ालिब बदला लेने वाला है

5

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ ۚ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ

बेशक खुदा पर कोई चीज़ पोशीदा नहीं है (न) ज़मीन में न आसमान में

6

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

वही तो वह खुदा है जो माँ के पेट में तुम्हारी सूरत जैसी चाहता है बनाता है उसके सिवा कोई माबूद नहीं

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ ءَايَاتٌ ۖ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ
 مُتَشَبِهَاتٌ ۚ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ ۖ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَبَّهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ
 وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۚ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَالرَّسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ ءَامَنَّا
 بِهِ ۚ كُلٌّ ۚ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُو۟لُوا۟ ۚ ۚ الْأَلْبَابِ

वही (हर चीज़ पर) ग़ालिब और दाना है (ए रसूल) वही (वह खुदा) है जिसने तुमपर किताब नाज़िल की उसमें की बाज़ आयतें तो मोहकम (बहुत सरीह) हैं वही (अमल करने के लिए) असल (व बुनियाद) किताब है और कुछ (आयतें) मुतशाबेह (मिलती जुलती) (गोल गोल जिसके मायने में से पहलू निकल सकते हैं) पस जिन लोगों के दिलों में कज़ी है वह उन्हीं आयतों के पीछे पड़े रहते हैं जो मुतशाबेह हैं ताकि फ़साद बरपा करें और इस ख्याल से कि उन्हें मतलब पर ढाले लें हालाँकि खुदा और उन लोगों के सिवा जो इल्म से बड़े पाए पर फ़ायज़ हैं उनका असली मतलब कोई नहीं जानता वह लोग (ये भी) कहते हैं कि हम उस पर ईमान लाए (यह) सब (मोहकम हो या मुतशाबेह) हमारे परवरदिगार की तरफ़ से है और अक्ल वाले ही समझते हैं

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ

(और दुआ करते हैं) ऐ हमारे पालने वाले हमारे दिल को हिदायत करने के बाद डॉवाडोल न कर और अपनी बारगाह से हमें रहमत अता फ़रमा इसमें तो शक ही नहीं कि तू बड़ा देने वाला है

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ ۚ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ

ऐ हमारे परवरदिगार बेशक तू एक न एक दिन जिसके आने में शुबह नहीं लोगों को इक्ठ्ठा करेगा (तो हम पर नज़रे इनायत रहे) बेशक खुदा अपने वायदे के खिलाफ़ नहीं करता

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ وَقُودُ النَّارِ

बेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया इस्तेयार किया उनको खुदा (के अज़ाब) से न उनके माल ही कुछ बचाएंगे, न उनकी औलाद (कुछ काम आएगी) और यही लोग जहन्नुम के ईंधन होंगे

كَذَّابٍ ءَالٍ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۚ
وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ

(उनकी भी) क्रौमे फिरऔन और उनसे पहले वालों की सी हालत है कि उन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया तो खुदा ने उन्हें उनके गुनाहों की पादाश (सज़ा) में ले डाला और खुदा सख्त सज़ा देने वाला है

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبُسَّ الْمِهَادُ

(ऐ रसूल) जिन लोगों ने कुफ़ इस्वेयार किया उनसे कह दो कि बहुत जल्द तुम (मुसलमानों के मुकाबले में) मग़लूब (हारे हुए) होंगे और जहन्नुम में इकट्ठे किये जाओगे और वह (क्या) बुरा ठिकाना है

قَدْ كَانَ لَكُمْ ءَايَةٌ ۚ فِي فِتْنَةِ الْقَتَا ۚ فِتْنَةٌ ۚ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ ۚ
يَرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَأَىٰ الْعَيْنِ ۚ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصَرِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً ۚ
لِّأُولَٰئِكَ ۚ إِلَىٰ الْأَبْصَرِ

बेशक तुम्हारे (समझाने के) वास्ते उन दो (मुखालिफ़ गिरोहों में जो (बद्र की लड़ाई में) एक दूसरे के साथ गुथ गए (रसूल की सच्चाई की) बड़ी भारी निशानी है कि एक गिरोह खुदा की राह में जेहाद करता था और दूसरा काफ़िरों का जिनको मुसलमान अपनी आँख से दुगना देख रहे थे (मगर खुदा ने क़लील ही को फ़तह दी) और खुदा अपनी मदद से जिस की चाहता है ताईद करता है बेशक आँख वालों के वास्ते इस वाक़ये में बड़ी इबरत है

زَيْنَ النَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ
وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَمِ وَالْحَرْثِ ۚ ذَلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللَّهُ
عِنْدَهُ ۚ حُسْنُ الْمَأْبَ

दुनिया में लोगों को उनकी मरग़ूब चीज़ें (मसलन) बीवियों और बेटों और सोने चाँदी के बड़े बड़े लगे हुए ढेरों और उम्दा उम्दा घोड़ों और मवेशियों और खेती के साथ उलफ़त भली करके दिखा दी गई है ये सब दुनियावी ज़िन्दगी के (चन्द रोज़ा) फ़ायदे हैं और (हमेशा का) अच्छा ठिकाना तो खुदा ही के यहाँ है

﴿ قُلْ أُوْنِبِكُمْ بِخَيْرٍ ﴾ ﴿ مِّنْ ذٰلِكُمْ ﴾ ﴿ لِّلَّذِيْنَ اَتَّقَوْا ﴾ ﴿ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّتْ ﴾ ﴿ تَجْرٰى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ﴾ ﴿ وَرِضْوٰنٌ ﴾ ﴿ مِّنَ اللّٰهِ ﴾ ﴿ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ ﴾ ﴿ بِالْعِبَادِ ﴾

(ऐ रसूल) उन लोगों से कह दो कि क्या मैं तुमको उन सब चीज़ों से बेहतर चीज़ बता दूँ (अच्छा सुनो) जिन लोगों ने परहेज़गारी इस्तेयार की उनके लिए उनके परवरदिगार के यहाँ (बेहिश्त) के वह बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं (और वह) हमेशा उसमें रहेंगे और उसके अलावा उनके लिए साफ सुथरी बीवियाँ हैं और (सबसे बढ़कर) खुदा की खुशनूदी है और खुदा (अपने) उन बन्दों को खूब देख रहा है जो दुआएँ माँगा करते हैं

﴿ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اِنَّا ءَاْمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَفِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴾

कि हमारे पालने वाले हम तो (बेताम्मुल) ईमान लाए हैं पस तू भी हमारे गुनाहों को बरख़्त दे और हमको दोज़ख के अज़ाब से बचा

﴿ الصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴾

(यही लोग हैं) सब्र करने वाले और सच बोलने वाले और (खुदा के) फ़रमाबरदार और (खुदा की राह में) खर्च करने वाले और पिछली रातों में (खुदा से तौबा) इस्तिग़फ़ार करने वाले

﴿ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهُٓ ﴾ ﴿ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُوْۤا۟لُوْا۟ ﴾ ﴿ الْعِلْمُ قَائِمٌ ﴾ ﴿ بِالْقِسْطِ ﴾ ﴿ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴾

ज़रूर खुदा और फ़रिश्तों और इल्म वालों ने गवाही दी है कि उसके सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं है और वह खुदा अद्ल व इन्साफ़ के साथ (कारख़ानाएँ आलम का) सँभालने वाला है उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वही हर चीज़ पर) ग़ालिब और दाना है (सच्चा) दीन तो खुदा के नज़दीक यकीनन (बस यही) इस्लाम है

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۚ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ أَلْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ

और अहले किताब ने जो उस दीने हक़ से इस्तेलाफ़ किया तो महज़ आपस की शरारत और असली (अम्र) मालूम हो जाने के बाद (ही क्या है) और जिस शख्स ने खुदा की निशानियों से इन्कार किया तो (वह समझ ले कि यकीनन खुदा (उससे) बहुत जल्दी हिसाब लेने वाला है

فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۚ وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا ۚ أَلْكِتَابَ
وَالْأُمِّيِّينَ ۚ أَسْلَمْتُمْ ۚ فَإِنْ أَسْلَمُوا ۚ فَقَدْ أَهْتَدُوا ۚ ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا ۚ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ
الْبَلْغُ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ ۚ بِالْعِبَادِ

(ऐ रसूल) पस अगर ये लोग तुमसे (स्वाह मा स्वाह) हुज्जत करे तो कह दो मैंने खुदा के आगे अपना सरे तस्लीम खम कर दिया है और जो मेरे ताबे है (उन्होंने) भी) और ऐ रसूल तुम अहले किताब और जाहिलों से पूछो कि क्या तुम भी इस्लाम लाए हो (या नहीं) पस अगर इस्लाम लाए हैं तो बेखटके राहे रास्त पर आ गए और अगर मुंह फेरे तो (ऐ रसूल) तुम पर सिर्फ़ पैग़ाम (इस्लाम) पहुंचा देना फ़र्ज़ है (बस) और खुदा (अपने बन्दों) को देख रहा है

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيَّ ۚ نَ بَغَيْرِ حَقٍّ ۚ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ
بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

बेशक जो लोग खुदा की आयतों से इन्कार करते हैं और नाहक़ पैग़म्बरों को क़त्ल करते हैं और उन लोगों को (भी) क़त्ल करते हैं जो (उन्हें) इन्साफ़ करने का हुक्म करते हैं तो (ऐ रसूल) तुम उन लोगों को दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दे दो

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَلُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ

यही वह (बदनसीब) लोग हैं जिनका सारा किया कराया दुनिया और आख़ेरत (दोनों) में अकारत गया और कोई उनका मददगार नहीं

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا ۚ نَصِيبًا ۚ مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ ۚ مِنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ

(ऐ रसूल) क्या तुमने (उलमाए यहूद) के हाल पर नज़र नहीं की जिनको किताब (तौरत) का एक हिस्सा दिया गया था (अब) उनको किताबे खुदा की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि वही (किताब) उनके झगड़ों का फैसला कर दे इस पर भी उनमें का एक गिरोह मुंह फेर लेता है और यही लोग रूगरदानी (मुँह फेरने) करने वाले हैं

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا ۚ لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا ۚ مَّعْدُودَتٍ ۚ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِم مَّا كَانُوا ۚ يَفْتَرُونَ

ये इस वजह से है कि वह लोग कहते हैं कि हमें गिनती के चन्द दिनों के सिवा जहन्नुम की आग हरगिज़ छुएगी भी तो नहीं जो इफ़तेरा परदाज़ी ये लोग बराबर करते आए हैं उसी ने उन्हें उनके दीन में भी धोखा दिया है

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَهُمْ لِيَوْمٍ ۚ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ ۚ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

फ़िर उनकी क्या गत होगी जब हम उनको एक दिन (क़यामत) जिसके आने में कोई शुबहा नहीं इक्ट्ठा करेंगे और हर शख्स को उसके किए का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उनकी किसी तरह हक़तल्फ़ी नहीं की जाएगी

قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ ۚ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ ۚ قَدِيرٌ ۚ

(ऐ रसूल) तुम तो यह दुआ माँगों कि ऐ खुदा तमाम आलम के मालिक तू ही जिसको चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और तू ही जिसको चाहे इज्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे हर तरह की भलाई तेरे ही हाथ में है बेशक तू ही हर चीज़ पर कादिर है

تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَمِيتِ وَتُخْرِجُ الْمَمِيتَ مِنَ الْحَيِّ ۚ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۚ

तू ही रात को (बढ़ा के) दिन में दाखिल कर देता है (तो) रात बढ़ जाती है और तू ही दिन को (बढ़ा के) रात में दाखिल करता है (तो दिन बढ़ जाता है) तू ही बेजान (अन्डा नुत्फ़ा वगैरह) से जानदार को पैदा करता है और तू ही जानदार से बेजान नुत्फ़ा (वगैरहा) निकालता है और तू ही जिसको चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاتُوا ۚ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۚ وَاللَّهُ إِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ

मोमिनीन मोमिनीन को छोड़ के काफ़िरों को अपना सरपरस्त न बनाएँ और जो ऐसा करेगा तो उससे खुदा से कुछ सरोकार नहीं मगर (इस क्रिस्म की तदबीरों से) किसी तरह उन (के शर) से बचना चाहो तो (ख़ैर) और खुदा तुमको अपने ही से डराता है और खुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है

قُلْ إِنْ تَخَفُوا ۖ مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمُهُ اللَّهُ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

ऐ रसूल तुम उन (लोगों से) कह दो किजो कुछ तुम्हारे दिलों में है तो ख्वाह उसे छिपाओ या ज़ाहिर करो (बहरहाल) खुदा तो उसे जानता है और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में वह (सब कुछ) जानता है और खुदा हर चीज़ पर कादिर है

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ ۚ مُحْضَرَةً ۚ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا ۚ أَوْ بَعِيدًا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَالٍ ۚ

(और उस दिन को याद रखो) जिस दिन हर शख्स जो कुछ उसने (दुनिया में) नेकी की है और जो कुछ बुराई की है उसको मौजूद पाएगा (और) आरज़ू करेगा कि काश उस की बदी और उसके दरमियान में ज़माना दराज़ (हाएल) हो जाता और खुदा तुमको अपने ही से डराता है और खुदा अपने बन्दों पर बड़ा शफ़ीक़ और (मेहरबान भी) है

31

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

(ऐ रसूल) उन लोगों से कह दो कि अगर तुम खुदा को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी करो कि खुदा (भी) तुमको दोस्त रखेगा और तुमको तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और खुदा बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

32

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ

(ऐ रसूल) कह दो कि खुदा और रसूल की फ़रमाबरदारी करो फिर अगर यह लोग उससे सरताबी करें तो (समझ लें कि) खुदा काफ़ि़रों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता

33

۝ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا ۖ وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ

बेशक खुदा ने आदम और नूह और खानदाने इबराहीम और खानदाने इमरान को सारे जहान से बरगुज़ीदा किया है

34

ذُرِّيَّةَ ۖ بَعْضُهَا مِنْ ۖ بَعْضٍ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

बाज़ की औलाद को बाज़ से और खुदा (सबकी) सुनता (और सब कुछ) जानता है

35

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا ۖ فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

(ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब इमरान की बीवी ने (खुदा से) अर्ज़ की कि ऐ मेरे पालने वाले मेरे पेट में जो बच्चा है (उसको मैं दुनिया के काम से) आज़ाद करके तेरी नज़्ज़ करती हूँ तू मेरी तरफ़ से (ये नज़्ज़ कुबूल फ़रमा तू बेशक बड़ा सुनने वाला और जानने वाला है

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ ۚ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

फिर जब वह बेटी जन चुकी तो (हैरत से) कहने लगी ऐ मेरे परवरदिगार (मैं क्या करूँ) मैं तो ये लड़की जनी हूँ और लड़का लड़की के ऐसा (गया गुज़रा) नहीं होता हालाँकि उसे कहने की ज़रूरत क्या थी जो वे जनी थी खुदा उस (की शान व मरतबा) से खूब वाकिफ़ था और मैंने उसका नाम मरियम रखा है और मैं उसको और उसकी औलाद को शैतान मरदूद (के फ़रेब) से तेरी पनाह में देती हूँ

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ ۙ وَأَنبَأَتْهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۖ وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۚ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ يَمْرِئُ أُنْثَىٰ لَكَ هَذَا ۚ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

तो उसके परवरदिगार ने (उनकी नज़्म) मरियम को खुशी से कुबूल फ़रमाया और उसकी नशो व नुमा (परवरिश) अच्छी तरह की और ज़करिया को उनका कफ़ील बनाया जब किसी वक्त ज़करिया उनके पास (उनके) इबादत के हुजरे में जाते तो मरियम के पास कुछ न कुछ खाने को मौजूद पाते तो पूछते कि ऐ मरियम ये (खाना) तुम्हारे पास कहाँ से आया है तो मरियम ये कह देती थी कि यह खुदा के यहाँ से (आया) है बेशक खुदा जिसको चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۖ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ

(ये माजरा देखते ही) उसी वक्त ज़करिया ने अपने परवरदिगार से दुआ कि और अर्ज की ऐ मेरे पालने वाले तू मुझको (भी) अपनी बारगाह से पाकीज़ा औलाद अता फ़रमा बेशक तू ही दुआ का सुनने वाला है

فَنَادَتْهُ الْمَلِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَكَلِمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا ۖ وَنَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ

अभी ज़करिया हुजरे में खड़े (ये) दुआ कर ही रहे थे कि फ़रिश्तों ने उनको आवाज़ दी कि खुदा तुमको यहया (के पैदा होने) की खुशखबरी देता है जो जो कलेमतुल्लाह (ईसा) की तस्दीक करेगा और (लोगों का) सरदार होगा और औरतों की तरफ़ रसाबत न करेगा और नेको कार नबी होगा

قَالَ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ ۖ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ ۖ ۝ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ

जकरिया ने अर्ज की परवरदिगार मुझे लड़का क्योंकर हो सकता है हालाँकि मेरा बुढ़ापा आ पहुंचा और (उसपर) मेरी बीवी बॉझ है (खुदा ने) फ़रमाया इसी तरह खुदा जो चाहता है करता है

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّي آيَةً ۖ ۝ قَالَ ءَايَتُكَ أَلاَّ تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا ۖ ۝ ۱
وَأَذْكُرْ رَبَّكَ كَثِيرًا ۖ ۱ وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَرِ

जकरिया ने अर्ज की परवरदिगार मेरे इत्मेनान के लिए कोई निशानी मुकरर फ़रमा इरशाद हुआ तुम्हारी निशानी ये है तुम तीन दिन तक लोगों से बात न कर सकोगे मगर इशारे से और (उसके शुक्रिये में) अपने परवरदिगार की अक्सर याद करो और रात को और सुबह तड़के (हमारी) तसबीह किया करो

وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَكَةُ يَمْرُؤُا إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَأَصْطَفَاكِ عَلَىٰ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ

और वह वाकिया भी याद करो जब फ़रिश्तों ने मरियम से कहा, ऐ मरियम तुमको खुदा ने बरगुज़ीदा किया और (तमाम) गुनाहों और बुराइयों से पाक साफ़ रखा और सारे दुनिया जहाँ की औरतों में से तुमको मुन्तख़िब किया है

يَمْرُؤُا أَقْنَتِي لِرَبِّكِ وَأَسْجُدِي وَأَرْكَعِي مَعَ الرُّكْعِينَ

(तो) ऐ मरियम इसके शुक्र से मैं अपने परवरदिगार की फ़रमाबदारी करूँ सजदा और रूकूउ करने वालों के साथ रूकूउ करती रहूँ

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَقُولُ أَقْلَمَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ
مَرْيَمَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ

(ऐ रसूल) ये ख़बर ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए से भेजते हैं (ऐ रसूल) तुम तो उन सरपरस्ताने मरियम के पास मौजूद न थे जब वह लोग अपना अपना क़लम दरिया में बतौर कुरआ के डाल रहे थे (देखें) कौन मरियम का कफ़ील बनता है और न तुम उस वक्त उनके पास मौजूद थे जब वह लोग आपस में झगड़ रहे थे

إِذْ قَالَتِ الْمَلَكَةُ يَمْرِيْمُ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِكَلِمَةٍ ۚ مِنْهُ أَسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا ۚ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ

(वह वाक़िया भी याद करो) जब फ़रिश्तों ने (मरियम) से कहा ऐ मरियम खुदा तुमको सिर्फ़ अपने हुक्म से एक लड़के के पैदा होने की खुशख़बरी देता है जिसका नाम ईसा मसीह इब्ने मरियम होगा (और) दुनिया और आख़ेरत (दोनों) में बाइज्जत (आबरू) और खुदा के मुकर्रब बन्दों में होगा

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَمِنَ الصّٰلِحِينَ

और (बचपन में) जब झूले में पड़ा होगा और बड़ी उम्र का होकर (दोनों हालतों में यकसॉ) लोगों से बातें करेगा और नेको कारों में से होगा

قَالَتْ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ لِي وَلَدٌ ۚ وَلَمْ يَمَسِّنِي بَشَرٌ ۚ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا ۚ فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ ۚ كُن فَيَكُونُ

(ये सुनकर मरियम ताज्जुब से) कहने लगी परवरदिगार मुझे लड़का क्योंकर होगा हालाँकि मुझे किसी मर्द ने छुआ तक नहीं इरशाद हुआ इसी तरह खुदा जो चाहता है करता है जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस कह देता है 'हो जा' तो वह हो जाता है

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ

और (ऐ मरियम) खुदा उसको (तमाम) किताबे आसमानी और अक्ल की बातें और (खासकर) तौरत व इन्जील सिखा देगा

وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُمْ بِآيَةٍ ۖ مِّن رَّبِّكُمْ ۚ أَنِّي أَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنْفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا ۚ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۚ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ

और बनी इसराइल का रसूल (करार देगा और वह उनसे यूँ कहेगा कि) मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (अपनी नबूवत की) यह निशानी लेकर आया हूँ कि मैं गुंधी हुई मिट्टी से एक परिन्दे की सूरत बनाऊँगा फिर उस पर (कुछ) दम करूँगा तो वो खुदा के हुक्म से उड़ने लगेगा और मैं खुदा ही के हुक्म से मादरज़ाद (पैदायशी) अंधे और कोढ़ी को अच्छा करूँगा और मूर्खों को ज़िन्दा करूँगा और जो कुछ तुम खाते हो और अपने घरों में जमा करते हो मैं (सब) तुमको बता दूँगा अगर तुम ईमानदार हो तो बेशक तुम्हारे लिये इन बातों में (मेरी नबूवत की) बड़ी निशानी है

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَلَأُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ ۚ وَجِئْتُكُمْ بِآيَةٍ ۚ مِّن رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا

और तौरित जो मेरे सामने मौजूद है मैं उसकी तसदीक़ करता हूँ और (मेरे आने की) एक ग़रज़ यह (भी) है कि जो चीज़े तुम पर हराम हैं उनमें से बाज़ को (हुक्मे खुदा से) हलाल कर दूँ और मैं तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (अपनी नबूवत की) निशानी लेकर तुम्हारे पास आया हूँ

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ ۚ مُّسْتَقِيمٌ

पस तुम खुदा से डरो और मेरी इताअत करो बेशक खुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है

ۚ فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ۚ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَأَشْهَدُ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ

पस उसकी इबादत करो (क्योंकि) यही नज़ात का सीधा रास्ता है फिर जब ईसा ने (इतनी बातों के बाद भी) उनका कुफ़्र (पर अड़े रहना) देखा तो (आखिर) कहने लगे कौन ऐसा है जो खुदा की तरफ़ होकर मेरा मददगार बने (ये सुनकर) हवारीयों ने कहा हम खुदा के तरफ़दार हैं और हम खुदा पर ईमान लाए

رَبَّنَا ءَامِنَّا بِمَا أُنزِلَتْ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ

और (ईसा से कहा) आप गवाह रहिए कि हम फ़रमाबरदार हैं

وَمَكُرُوا؟ وَمَكَرَ اللَّهُ؟ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمُكْرِرِينَ

और खुदा की बारगाह में अर्ज की कि ऐ हमारे पालने वाले जो कुछ तूने नाज़िल किया हम उसपर ईमान लाए और हमने तेरे रसूल (ईसा) की पैरवी इस्तेयार की पस तू हमें (अपने रसूल के) गवाहों के दफ्तर में लिख ले

[illegible]

और यहूदियों (ने ईसा से) मक्कारों की और खुदा ने उसके दफ़ईया की तदबीर की और खुदा सब से बेहतर तदबीर करने वाला है (वह वक्त भी याद करो) जब ईसा से खुदा ने फ़रमाया ऐ ईसा मैं ज़रूर तुम्हारी ज़िन्दगी की मुद्दत पूरी करके तुमको अपनी तरफ़ उठा लूंगा और काफ़िरों (की ज़िन्दगी) से तुमको पाक व पाकीज़ा रखूंगा और जिन लोगों ने तुम्हारी पैरवी की उनको क़यामत तक काफ़िरों पर ग़ालिब रखूंगा फिर तुम सबको मेरी तरफ़ लौटकर आना है

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَاعَذِّبْهُمْ ۖ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نَّاصِرِينَ

तब (उस दिन) जिन बातों में तुम (दुनिया) में झगड़े करते थे (उनका) तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर दूंगा पस जिन लोगों ने कुफ़्र इस्वेयार किया उनपर दुनिया और आखिरत (दोनों में) सख्त अज़ाब करूंगा और उनका कोई मददगार न होगा

وَأَمَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ وَعَمِلُوا الصَّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ
الظَّالِمِينَ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए तो खुदा उनको उनका पूरा अज्र व सवाब देगा और खुदा ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता

ذٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰیٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ

(ऐ रसूल) ये जो हम तुम्हारे सामने बयान कर रहे हैं कुदरते खुदा की निशानियाँ और हिकमत से भरे हुये तज़क़िरे हैं

اِنَّ مَثَلَ عِيسٰی عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ۚ خَلَقَهُ ۚ مِنْ تُرَابٍ ۚ ثُمَّ قَالَ لَهُ ۙ كُنْ فَيَكُوْنُ

खुदा के नज़दीक तो जैसे ईसा की हालत वैसी ही आदम की हालत कि उनको को मिट्टी का पुतला बनाकर कहा कि 'हो जा' पस (फ़ौरन ही) वह (इन्सान) हो गया

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنَ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ

(ऐ रसूल ये है) हक़ बात (जो) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (बताई जाती है) तो तुम शक करने वालों में से न हो जाना

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْاۙ نَدْعُ اٰبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلٰى الْكَٰذِبِيْنَ

फिर जब तुम्हारे पास इल्म (कुरान) आ चुका उसके बाद भी अगर तुम से कोई (नसरानी) ईसा के बारे में हुज्जत करें तो कहो कि (अच्छा मैदान में) आओ हम अपने बेटों को बुलाएं तुम अपने बेटों को और हम अपनी औरतों को (बुलाएं) और तुम अपनी औरतों को और हम अपनी जानों को बुलाएं ओर तुम अपनी जानों को

اِنَّ هٰذَا لَهٗوَ الْقَصَصِ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْۢ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهٗوَ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ

उसके बाद हम सब मिलकर (खुदा की बारगाह में) गिड़गिड़ाएं और झूठों पर खुदा की लानत करें (ऐ रसूल) ये सब यक़ीनी सच्चे वाक़यात हैं और खुदा के सिवा कोई माबूद (क्राबिले परसतिश) नहीं है

فَاِنْ تَوَلَّوْاۙ فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۭ بِالْمُفْسِدِيْنَ

और बेशक खुदा ही सब पर ग़ालिब और हिकमत वाला है

قُلْ يَٰ أَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ تَعَالَوْا۟ ۚ إِلَىٰ كَلِمَةٍ ۖ سَوَآءٍ ۖ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا ٱللَّهَ وَلَا
نُشْرِكَ بِهِۦ ۖ شَيْءٌ ۚ ۙ وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا ۚ ۙ مِّنْ دُونِ ٱللَّهِ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا۟ ۚ
فَقُولُوا۟ ۚ أَشْهَدُوا۟ ۚ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ

फिर अगर इससे भी मुंह फेरें तो (कुछ) परवाह (नहीं) खुदा फ़सादी लोगों को खूब जानता है (ऐ रसूल) तुम (उनसे) कहो कि ऐ
अहले किताब तुम ऐसी (ठिकाने की) बात पर तो आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान यकसों है कि खुदा के सिवा किसी की
इबादत न करें और किसी चीज़ को उसका शरीक न बनाएं और खुदा के सिवा हममें से कोई किसी को अपना परवरदिगार न
बनाए अगर इससे भी मुंह मोड़ें तो तुम गवाह रहना हम (खुदा के) फ़रमाबरदार हैं

يَٰ أَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لِمَ تُحَآجُّونَ فِىٓ إِبْرَٰهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ ٱلتَّوْرَةُ وَٱلْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنۢ بَعْدِهِۦ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

ऐ अहले किताब तुम इबराहीम के बारे में (स्वाह मा स्वाह) क्यों झगड़ते हो कि कोई उनको नसरानी कहता है कोई यहूदी
हालाँकि तौरैत व इन्जील (जिनसे यहूद व नसारा की इब्तेदा है वह) तो उनके बाद ही नाज़िल हुई

هَٰأَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ حُجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِۦ ۖ عِلْمٌ ۖ فَلِمَ تُحَآجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِۦ ۖ
عِلْمٌ ۚ ۙ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते ? (ऐ लो अरे) तुम वही एहमक़ लोग हो कि जिस का तुम्हें कुछ इल्म था उसमें तो झगड़ा
कर चुके (खैर) फिर तब उसमें क्या (स्वाह मा स्वाह) झगड़ने बैठे हो जिसकी (सिरे से) तुम्हें कुछ खबर नहीं और (हक़क़ते हाल
तो) खुदा जानता है और तुम नहीं जानते

مَا كَانَ إِبْرَٰهِيمَ يَهُودِيًّا ۖ وَلَا نَصْرَانِيًّا ۖ وَلَكِن كَانَ حَنِيفًا ۖ مُّسْلِمًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ
ٱلْمُشْرِكِينَ

इबराहीम न तो यहूदी थे और न नसरानी बल्कि निरे खरे हक़ पर थे (और) फ़रमाबरदार (बन्दे) थे और मुशरिकों से भी न थे

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ

इबराहीम से ज्यादा खुसूसियत तो उन लोगों को थी जो खास उनकी पैरवी करते थे और उस पैग़म्बर और ईमानदारों को (भी) है और मोमिनीन का खुदा मालिक है

وَدَّتْ طَّائِفَةٌ ۙ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّوكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ

(मुसलमानो) अहले किताब से एक गिरोह ने बहुत चाहा कि किसी तरह तुमको राहेरास्त से भटका दे हालाँकि वह (अपनी तदबीरों से तुमको तो नहीं मगर) अपने ही को भटकाते हैं

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ

और उसको समझते (भी) नहीं ऐ अहले किताब तुम खुदा की आयतों से क्यों इन्कार करते हो, हालाँकि तुम खुद गवाह बन सकते हो

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ

ऐ अहले किताब तुम क्यों हक़ व बातिल को गड़बड़ करते और हक़ को छुपाते हो हालाँकि तुम जानते हो

وَقَالَتْ طَّائِفَةٌ ۙ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ ءَامِنُوا ۙ بِالَّذِي أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ ءَامَنُوا ۙ وَجْهَ النَّهَارِ وَآكُفِّرُوا ۙ ءَاخِرَهُ ۙ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ

और अहले किताब से एक गिरोह ने (अपने लोगों से) कहा कि मुसलमानों पर जो किताब नाज़िल हुई है उसपर सुबह सवेरे ईमान लाओ और आखिर वक्त लट्कार कर दिया करो शायद मुसलमान (इसी तदबीर से अपने दीन से) फिर जाए

وَلَا تُؤْمِنُوا ۚ إِلَّا لِمَنْ تَبَعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ أَنْ يُؤْتَىٰ أَحَدٌ ۚ مِثْلَ مَا أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَاجُّوكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۚ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۚ

और तुम्हारे दीन की पैरवरी करे उसके सिवा किसी दूसरे की बात का ऐतबार न करो (ऐ रसूल) तुम कह दो कि बस खुदा ही की हिदायत तो हिदायत है (यहूदी बाहम ये भी कहते हैं कि) उसको भी न (मानना) कि जैसा (उम्दा दीन) तुमको दिया गया है, वैसा किसी और को दिया जाय या तुमसे कोई शख्स खुदा के यहाँ झगड़ा करे (ऐ रसूल तुम उनसे) कह दो कि (ये क्या ग़लत ख्याल है) फ़ज़ल (व करम) खुदा के हाथ में है वह जिसको चाहे दे और खुदा बड़ी गुन्जाईश वाला है (और हर शै को) े जानता है

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

जिसको चाहे अपनी रहमत के लिये खास कर लेता है और खुदा बड़ा फ़ज़लों करम वाला है

ۚ وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِنْ تَأْمَنُهُ بِقِنطَارٍ ۚ يُؤَدِّهِ ۚ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ إِنْ تَأْمَنُهُ بدينارٍ ۚ لَا يُؤَدِّهِ ۚ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَائِمًا ۚ اذْكَرَ بَأَنَّهُمْ قَالُوا ۚ لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيِّ ۚ نَ سَبِيلٌ ۚ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ

और अहले किताब कुछ ऐसे भी हैं कि अगर उनके पास रूपए की ढेर अमानत रख दो तो भी उसे (जब चाहो) वैसे ही तुम्हारे हवाले कर देंगे और बाज़ ऐसे हैं कि अगर एक अशर्फी भी अमानत रखो तो जब तक तुम बराबर (उनके सर) पर खड़े न रहोगे तुम्हें वापस न देंगे ये (बदमुआम लगी) इस वजह से है कि उन का तो ये क़ौल है कि (अरब के) जाहिलो (का हक़ मार लेने) में हम पर कोई इल्ज़ाम की राह ही नहीं और जान बूझ कर खुदा पर झूठ (तूफ़ान) जोड़ते हैं

بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ ۚ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ

हाँ (अलबत्ता) जो शख्स अपने एहद को पूरा करे और परहेज़गारी इस्तेयार करे तो बेशक खुदा परहेज़गारों को दोस्त रखता है

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أَوْ لَئِكَ لَا خَلْقَ لَهُمْ فِي آخِرَةِ
وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

बेशक जो लोग अपने एहद और (क़समे) जो खुदा (से किया था उसके) बदले थोड़ा (दुनियावी) मुआवेज़ा ले लेते हैं उन ही लोगों के वास्ते आखिरत में कुछ हिस्सा नहीं और क़यामत के दिन खुदा उनसे बात तक तो करेगा नहीं और उनकी तरफ़ नज़र (रहमत) ही करेगा और न उनको (गुनाहों की गन्दगी से) पाक करेगा और उनके लिये दर्दनाम अज़ाब है

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلُؤْنَ ۝ أَنْ أَلْسِنَتُهُمْ بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ
الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ
وَهُمْ يَعْلَمُونَ

और अहले किताब से बाज़ ऐसे ज़रूर हैं कि किताब (तौरत) में अपनी ज़बाने मरोड़ मरोड़ के (कुछ का कुछ) पढ़ जाते हैं ताकि तुम ये समझो कि ये किताब का जुज़ है हालाँकि वह किताब का जुज़ नहीं और कहते हैं कि ये (जो हम पढ़ते हैं) खुदा के यहाँ से (उतरा) है हालाँकि वह खुदा के यहाँ से नहीं (उतरा) और जानबूझ कर खुदा पर झूठ (तूफ़ान) जोड़ते हैं

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا ۝
عِبَادًا ۝ أَلَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا ۝ رَبَّنِي ۝ نَبَا كُنْتُمْ تُعْلِمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا
كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ

किसी आदमी को ये ज़ेबा न था कि खुदा तो उसे (अपनी) किताब और हिकमत और नबूवत अता फ़रमाए और वह लोगों से कहता फ़िरे कि खुदा को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ बल्कि (वह तो यही कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले बन जाओ क्योंकि तुम तो (हमेशा) किताबे खुदा (दूसरो) को पढ़ाते रहते हो और तुम खुद भी सदा पढ़ते रहे हो

وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا ۝ الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّ ۝ أَنْ أَرْبَابًا ۝ أَيْأْمُرُكُمْ بِالْكَفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ
مُسْلِمُونَ

और वह तुमसे ये तो (कभी) न कहेगा कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को खुदा बना लो भला (कहीं ऐसा हो सकता है कि) तुम्हारे मुसलमान हो जाने के बाद तुम्हें कुफ़्र का हुक्म करेगा

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّ ۖ لَمَّا آتَيْنَاكُمْ مِّنْ كِتَابٍ ۖ وَحِكْمَةٍ ۖ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ ۖ مُّصَدِّقٌ ۖ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ ۖ وَلَتَنْصُرُنَّهُ ۖ ۖ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِي ۖ قَالُوا ۖ أَقْرَرْنَا ۖ قَالَ فَاشْهَدُوا ۖ وَأَنَا ۖ مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۖ

(और ऐ रसूल वह वक्त भी याद दिलाओ) जब खुदा ने पैग़म्बरों से इकरार लिया कि हम तुमको जो कुछ किताब और हिकमत (वगैरह) दे उसके बाद तुम्हारे पास कोई रसूल आए और जो किताब तुम्हारे पास उसकी तसदीक करे तो (देखो) तुम ज़रूर उस पर ईमान लाना, और ज़रूर उसकी मदद करना (और) खुदा ने फ़रमाया क्या तुमने इकरार लिया तुमने मेरे (एहद का) बोझ उठा लिया सबने अर्ज़ की हमने इकरार किया इरशाद हुआ (अच्छा) तो आज के क़ौल व (करार के) आपस में एक दूसरे के गवाह रहना

فَمَن تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُوۓلَٰئِكَ هُمُ الْفَٰسِقُونَ

और तुम्हारे साथ मैं भी एक गवाह हूँ फिर उसके बाद जो शख्स (अपने क़ौल से) मुंह फेरे तो वही लोग बदचलन हैं

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ ۖ أَسْلَمَ مَن فِى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا ۖ وَكَرْهًا ۖ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ

तो क्या ये लोग खुदा के दीन के सिवा (कोई और दीन) ढूँढते हैं हालाँकि जो (फ़रिश्ते) आसमानों में हैं और जो (लोग) ज़मीन में हैं सबने खुशी खुशी या ज़बरदस्ती उसके सामने अपनी गर्दन डाल दी है और (आखिर सब) उसकी तरफ़ लौट कर जाएंगे

قُلْ ءَامَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ عَلَىٰٓ إِبْرٰهِيْمَ وَإِسْمٰعِيْلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ ۖ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ ۖ مُسْلِمُونَ

(ऐ रसूल उन लोगों से) कह दो कि हम तो खुदा पर ईमान लाए और जो किताब हम पर नाज़िल हुई और जो (सहीफ़े) इबराहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याकूब और औलादे याकूब पर नाज़िल हुये और मूसा और ईसा और दूसरे पैग़म्बरों को जो (जो किताब) उनके परवरदिगार की तरफ़ से इनायत हुई (सब पर ईमान लाए) हम तो उनमें से किसी एक में भी फ़र्क़ नहीं करते

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا ۖ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي آلِ آخِرَةِ مِنَ الْخُسِرِينَ

और हम तो उसी (यकता खुदा) के फ़रमाबरदार हैं और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन की ख्वाहिश करे तो उसका वह दीन हरगिज़ कुबूल ही न किया जाएगा और वह आखिरत में सख्त घाटे में रहेगा

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا ۖ كَفَرُوا ۚ بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا ۚ أَنَّ الرُّسُولَ حَقٌّ ۖ وَجَاءَهُمُ
الْبَيِّنَاتُ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

भला खुदा ऐसे लोगों की क्योंकर हिदायत करेगा जो इमाने लाने के बाद फिर काफ़िर हो गए हालाँकि वह इक्क़रार कर चुके थे कि पैग़म्बर (आखिरूज़ज़मा) बरहक़ हैं और उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े भी आ चुके थे और खुदा ऐसी हठधर्मी करने वाले लोगों की हिदायत नहीं करता

أَوَلَيْكَ جَزَاؤُهُمْ أَنْ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ

ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि उनपर खुदा और फ़रिश्तों और (दुनिया जहाँन के) सब लोगों की फिटकार हैं

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ

और वह हमेशा उसी फिटकार में रहेंगे न तो उनके अज़ाब ही में तख़्कीफ़ की जाएगी और न उनको मोहलत दी जाएगी

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا ۖ مِنْ ۚ بَعْدَ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ

मगर (हाँ) जिन लोगों ने इसके बाद तौबा कर ली और अपनी (खराबी की) इस्लाह कर ली तो अलबत्ता खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ أَزْدَادُوا ۖ كُفْرًا ۚ لَنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ
الضَّالُّونَ

जो अपने ईमान के बाद काफ़िर हो बैठे फिर (रोज़ बरोज़ अपना) कुफ़्र बढ़ाते चले गये तो उनकी तौबा हरगिज़ न कुबूल की जाएगी और यही लोग (पल्ले दरजे के) गुमराह हैं

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَمَاتُوا ۖ وَهُمْ كُفَّارٌ ۖ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا ۖ
وَلَوْ أَفْتَدَىٰ بِهِ ۖ ۚ أَوْ لَكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इस्तिथार किया और कुफ़्र की हालत में मर गये तो अगरचे इतना सोना भी किसी की गुलू खलासी (छुटकारा पाने) में दिया जाए कि ज़मीन भर जाए तो भी हरगिज़ न कुबूल किया जाएगा यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अज़ाब होगा और उनका कोई मददगार भी न होगा

لَنْ تَنَالُوا ۖ الْبِرَّ حَتَّىٰ تُنْفِقُوا ۖ مِمَّا تُحِبُّونَ ۖ وَمَا تُنْفِقُوا ۖ مِنْ شَيْءٍ ۖ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ ۖ
عَلِيمٌ ۖ

(लोगों) जब तक तुम अपनी पसन्दीदा चीज़ों में से कुछ राहे खुदा में खर्च न करोगे हरगिज़ नेकी के दरजे पर फ़ायज़ नहीं हो सकते और तुम कोई